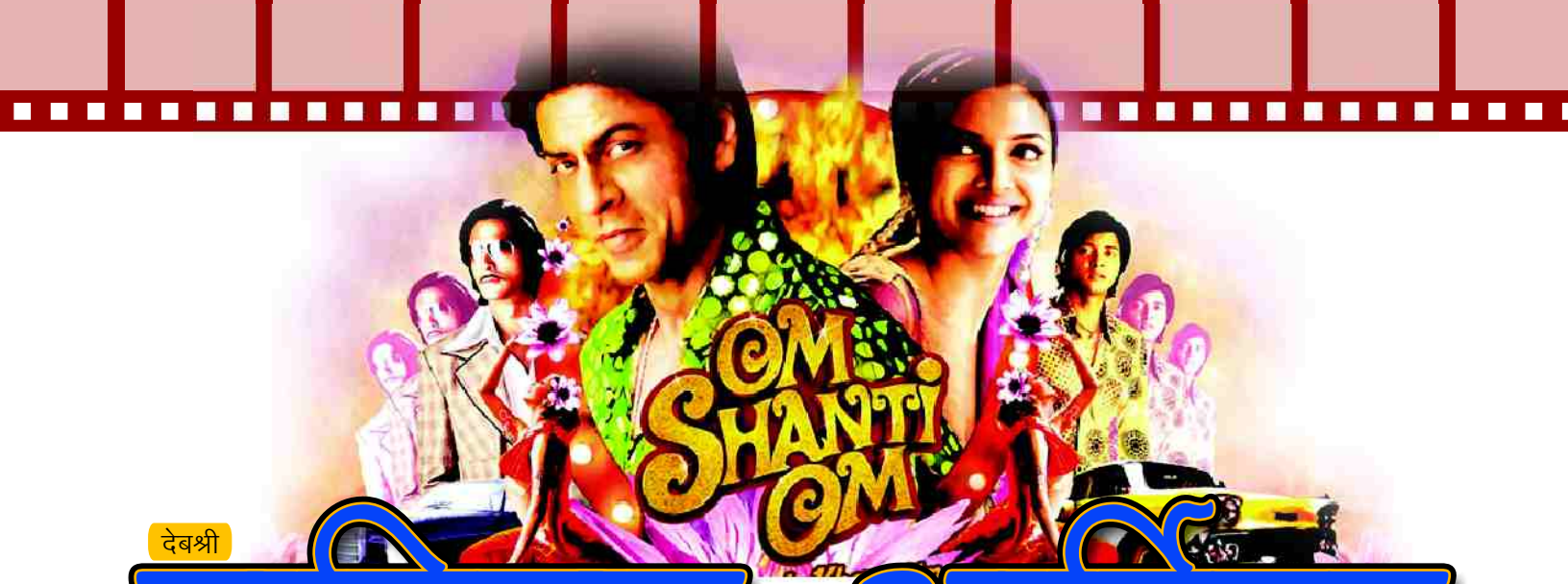

देबश्री

जूनियर आर्टिस्ट

भागो...!

पिछले साल आई फिल्म ''ओम शान्ति ओम'' में ओमप्रकाश मखीजा बने शाहरुख खान को जब यह बताया गया था कि फिल्म में उनका यही एकमात्र संवाद है तो हम सब उनका यह हाल देखकर खूब हँसे थे। शाहरुख उस फिल्म में एक जूनियर आर्टिस्ट बने थे, जिसे फिल्मों में गाँववालों की भीड़ का हिस्सा बनने के रोल ही मिलते हैं।

वह तो फिल्म थी। लेकिन तुमने कभी सोचा है जो तमाम फिल्में हम देखते हैं उनमें जो अनजान चेहरे बार-बार नज़र आते हैं वो असल में कौन हैं? नायक- नायिका की शादी कराने आया पादरी या पंडित या फिर सब्ज़ीवाला, ये सब कौन हैं?

ये सभी कलाकार जूनियर आर्टिस्ट कहलाते हैं। तुमने बड़े कलाकारों की ज़िन्दगी के बारे में अनेक किस्से सुने होंगे। आज हमारी दोस्त देबश्री तुम्हें इन जूनियर आर्टिस्ट की असल ज़िन्दगी से रू-ब-रू कराएँगी। तुम्हें पता है मुम्बई की फिल्मी दुनिया में एक कहावत है, ''हर स्टार की कामयाबी के पीछे एक जूनियर आर्टिस्ट की मेहनत छुपी होती है।''

देबश्री खुद मुम्बई में फिल्म निर्माण से जुड़ी रही हैं। इसी दौरान एक दिन उनकी नज़र कागज़ के एक आधे फटे टुकड़े पर पड़ी। यह टुकड़ा जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन का भर्ती फॉर्म था। इसमें कई मज़ेदार बातें थीं। इसके बारे में और जानने के लिए देबश्री निकल पड़ी इस एसोसिएशन के दफ्तर की तलाश में। आगे की कहानी तुम खुद देबश्री से ही सुनो...

हॉल खाली था। मुझे लगा कि दो सौ मीटर के दायरे में वहाँ मैं अकेली औरत थी। भरत नाम के झाड़ू लगाने वाले को मेरे आने का पता चल चुका था। उससे मुझे पता चला कि सब लोग एसोसिएशन के सालाना चुनाव के लिए अँधेरी गए हुए हैं। दीवारों पर तरह-तरह के पोस्टर लगे थे। पोस्टरों पर सदस्यों से वोट देने की अपील की गई थी। तकरीबन चौदह साल के भरत ने मुझे बताया कि वैसे तो वह फूलों की एक दुकान में काम करता है, मगर जब-तब इधर-उधर के काम भी कर लेता है। आज उसे अगले दिन होने वाले गणतंत्र दिवस समारोह के लिए रोशनी का इन्तज़ाम करने के लिए बुलाया गया है। मगर उसे इस बात का पता नहीं था कि यह सारी गहमागहमी किसलिए होती है। उसे लग रहा था कि अगले दिन लक्ष्मी पूजा या कोई ऐसा ही त्यौहार है। उसने बताया कि यह दफ्तर कुछ ही माह पहले खुला था। पहले यहाँ तबेला हुआ करता था।

इसके बाद मैं भर्ती पुस्तक ढूँढने लगी। जब मुझे यह रजिस्टर मिल गया तो मैंने चुपचाप उसमें से एक फॉर्म फाड़ लिया। भरत

मुझे जो फॉर्म मिला वह था:

जूनियर आर्टिस्ट्स एसोसिएशन

(पंजीकरण संख्या 2892, ट्रेड यूनियन अधिनियम 1926 - एफडब्ल्यूआईसीई से सम्बद्ध)

भर्ती आर्डर

सिने एजेंट का नाम मेसर्स:...

पिक्चर/सीरियल का नाम:...

ज़रूरत कहाँ पर है:...

इंडोर/लोकल, आउटडोर/आउट स्टेशन/रिपोर्टिंग तारीख:...........................

विशेष निर्देश, अगर कोई हो तो:...

शिफ्ट टाईम: सुबह 7 बजे/ सुबह 9 बजे/ शाम 2.30 बजे/ शाम 7 बजे/ शाम 9.30 बजे।

जूनियर आर्टिस्ट्स के नाम:...

सम्भ्रान्त वर्ग:

1.

2.

3.

4.

5.

बी ग्रेड:

1.

2.

3.

4.

फॉर्म की मोटा-मोटी रूपरेखा:

● तुम गौर करोगे फॉर्म में जूनियर आर्टिस्ट की दो श्रेणियाँ बनाई गई हैं – "सम्भ्रान्त" और "बी ग्रेड"।

इन कलाकारों को सूरत और पहनावे के अनुसार दो श्रेणियों में बाँटा जाता है। जो कलाकार पैसे वाले या अमीर की भूमिका निभा सकते हैं। (यानी वैसे दिखते हैं) और पार्टी, बार, क्लब आदि में भीड़ का रोल अदा कर सकते हैं उन्हें "सम्भ्रान्त" श्रेणी में रखा जाता है और उन्हें ज़्यादा पैसा मिलता है। जो व्यक्ति गरीब, मज़दूर, सब्ज़ी वाले का रोल कर सकते हैं उन्हें कम पैसा मिलता है। वे "बी ग्रेड" के कहलाते हैं। एक खास बात यह है कि जैसे-जैसे सिनेमा में अमीरों के रोल बढ़ते जाते हैं इनको काम मिलना मुश्किल होता जाता है।

● फॉर्म के पिछली तरफ वेतन की भी एक बड़ी अजीबोगरीब और आकर्षक फेहरिस्त दी गई थी। जैसे:

श्रेणी प्रति शिफ्ट रुपए

सम्भ्रान्त: 430 रुपए

बी ग्रेड: 322 रुपए

प्रचलित भत्ता

लंच का पैसा: 38 रुपए दोपहर 12.00 बजे (प्रात: 9/9.30 की शिफ्ट में)

यात्रा भत्ता: 39 रुपए अनिवार्य।

आउट स्टेशन आउटडोर के लिए

94 रुपए लंच और 148 यात्रा भत्ता। होली के दृश्य या गीले/सूखे दृश्यों में इस्तेमाल होने वाली प्रत्येक अतिरिक्त या निजी पोशाक के लिए धुलाई की कीमत 30 रुपए। जूनियर आर्टिस्ट को ऐसे दृश्यों के लिए कम से कम तीन जोड़ी कपड़े लेकर आना पड़ता है।

गाने (होठों की गति/होली सूखा/गीला/बरसात का दृश्य)

आधी शिफ्ट के वेतन का अतिरिक्त भुगतान।

विशेष मेकअप और गेटअप

पूरे शरीर पर तेल/कोई भी रंग/खून/सूखा/गीला - एक पूरी शिफ्ट का अतिरिक्त वेतन। अगर यही चीज़ें सिर्फ चेहरे पर लगाई गई हैं तो आधी शिफ्ट का अतिरिक्त वेतन। होली आदि के दृश्यों में कलाकारों को घण्टों नुकसानदेह रंगों में भीगे हुए रहना पड़ता है।

दाढ़ी: एक शिफ्ट का अतिरिक्त वेतन
विग: आधा शिफ्ट का अतिरिक्त वेतन

संवाद रहित छोटी भूमिकाओं के लिए

हनुमान, पुजारी (पंडित) आदि के लिए आधी शिफ्ट का वेतन।

विशेष कार्य

तैरने/मोटरसाइकिल चलाने/घुड़सवारी के लिए एक शिफ्ट का अतिरिक्त वेतन।
साइकिल चलाने और देह दिखाने के लिए आधी शिफ्ट का वेतन।

डुप्लिकेटिंग

अगर किसी सम्भ्रान्त/बी ग्रेड जूनियर आर्टिस्ट से डुप्लिकेट के रूप में काम कराया जाता है तो उसे हीरो/हीरोइन/विलेन के डुप्लिकेट की भूमिका करने के लिए प्रति शिफ्ट 690 रुपए दिए जाएँगे। अन्य पात्रों के डुप्लिकेट की भूमिका निभाने के लिए 625 रुपए प्रति शिफ्ट मिलेंगे।

निर्देशक की देख-रेख में किया जाएगा तो जूनियर आर्टिस्ट को आधी शिफ्ट का अतिरिक्त वेतन मिलेगा। हर चार घण्टे के बाद अनिवार्य अवकाश आदि-आदि।

जूनियर आर्टिस्ट हिन्दी फिल्मों में आमतौर पर छोटी-मोटी भूमिकाएँ निभाते हैं। इन भूमिकाओं में अकसर संवाद की भी ज़रूरत नहीं होती। पेशेवर, प्रशिक्षित अभिनेता ऐसी भूमिकाओं को अपनी हैसियत से कम मानते हैं या फिर बेहिसाब पैसा लेते हैं। हवलदार, जज, फादर, सरदारजी, भिखारी, बिज़नेसमैन, बाई आदि भूमिकाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। जैसा कि इस फॉर्म से पता चलता है, "पुजारी" और हनुमान की भूमिकाएँ हिन्दी

फुर्सत के क्षण

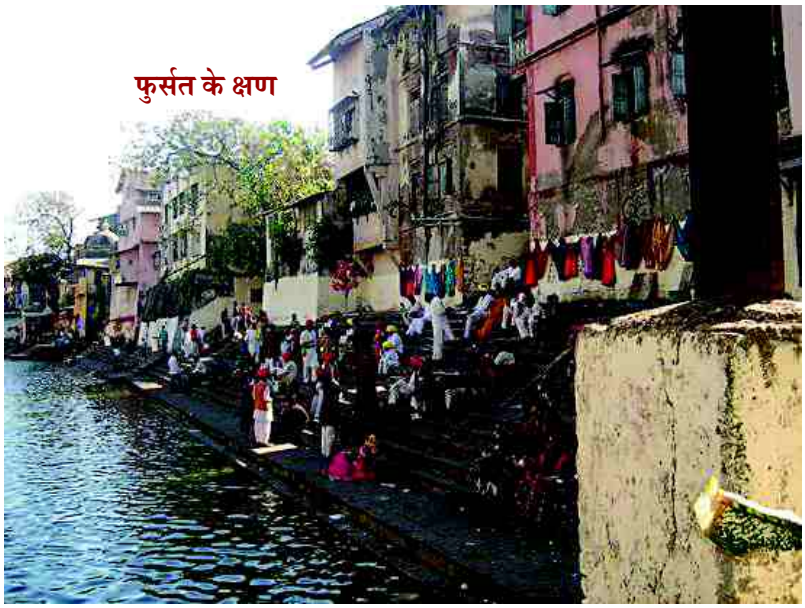

पर इस्तेमाल होती हैं – तभी तो फॉर्म में उनका खास तौर से ज़िक्र किया गया है! (कई जूनियर आर्टिस्ट) एक ही भूमिका निभाने के लिए मशहूर हो चुके हैं)

इन किरदारों को निभाने के लिए अभिनय दक्षता की ज़रूरत तो नहीं होती, मगर ये भूमिकाएँ कलाकारों के लिए भारी ज़रूर पड़ती हैं। भारी-भरकम, खुजलीदार दाढ़ियों, घटिया मेकअप या नकली खून में लथपथ घण्टों धूप में पड़े रहना या लाश की तरह लेटे रहना आसान काम नहीं होता। लोकेशन पर बड़े-बड़े सितारों के आगे-पीछे तो कुर्सी, छतरी और जूस लेकर स्पॉट ब्वॉयज़ की फौज घूमती है मगर जूनियर आर्टिस्ट के पास ऐसी कोई सुविधा नहीं होती। उन्हें तो हर समस्या का हल खुद ही ढूँढना पड़ता है।

जूनियर आर्टिस्ट को भीड़ के तौर पर या पृष्ठभूमि में भीड़ दिखाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। आम तमाशबीनों के तौर पर खड़े होकर ये कलाकार कहीं तालियाँ बजाते हैं, कहीं हमदर्दी जताते हैं, कहीं शोर मचाते हैं, तो कहीं शर्म का इज़हार करते हैं। इस तरह ये कलाकार फिल्म के काल्पनिक पात्रों के अनुभवों को एक विश्वसनीयता दे देते हैं। वे बेआवाज़, बेनाम रहते हुए आम आदमी का किरदार अदा करते हैं।